Dr.Raman Kumar Thakur

Assistant professor (Guest) Deptt. Of Economics, D.B.College, Jaynagar, Madhubani. Class:-B.A.part-2(H.)Date:-06-11-2020.Lecture n.-08.

Topic:- "भारतीय औद्योगिक विकास बैंक"(Industrial Development Bank of India-I. D. B. I.)

:- 1947 के बाद उद्योगों को दीर्घकालीन वित्त उपलब्ध कराने के लिए कायम किए गए विभिन्न संस्थानों में औद्योगिक विकास बैंक सबसे बाद में काम किया गया साथ ही औद्योगिक वित्त निगम, राज्य वित्त निगम, औद्योगीक ऋण , तथा विनियोग निगम राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम भारतीय पुनरवित निगम (Refinance Corporation ofindia) कई वर्षों से सीधे ऋण देने का कार्य किया है। साथ

ही साथ हिस्सो तथा बांडो को कई वर्षों से सीधे ऋण देने हिस्सों तथा बॉन्डो को स्वीकार करने और प्राप्त किए गए रीना की गारंटी देने के लिए कार्य करते रहे हैं। एक और तो बढ़ते हुए औद्योगिकरण के लिए बड़े पैमाने पर वित्तीय साधन उपलब्ध कराने के उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक नई संस्था बनानी आवश्यक थी। दूसरी ओर यह भी आवश्यक था की औद्योगिक वित्त उपलब्ध कराने वाले विभिन्न संस्थानों की क्रियाओं को सम्व्निनत किया जाए इन दोनों उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सरकार ने भारतीय औद्योगिक विकास बैंक स्थापित करने का निर्णय जुलाई 1964 में किया जो उस समय की मांग थी।

भारतीय औद्योगिक विकास बैंक रिजर्व बैंक के पूर्ण स्वामित्वाधीन 1976 तक इसका एक अनुषंगी बैंक था जिसकी अधिकृत पूंजी 50 करोड़ रुपए है। भारतीय औद्योगिक विकास बैंक के प्रबंध

एवं निर्देशन एक निदेशक मंडल के अधीन है जो रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के केंद्रीय निदेशक मंडल की भांति ही बनाया जाता है रिजर्व बैंक के गवर्नर और डिप्टी गवर्नर इस बैंक के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष होते हैं निदेशक मंडल द्वारा एक कार्यकारिणी समिति नियुक्त की जाती है जो इसे शॉप पर गए कार्यों की देखभाल करती है 1976 में भारतीय औद्योगिक विकास बैंक को भारतीय रिजर्व बैंक से अलग कर दिया गया और इसका स्वामित्व भारत सरकार ने अपने हाथ में ले लीया।

- भारतीय विकास बैंक के कार्य:- इसका मुख्य कार्य औद्योगिक उद्यमों को वित्तीय सहायता प्रदान करना है साथ ही जिन उद्योगों को बैंक से सहायता मिल सकती है उनमें विनिर्माण, खनन, विधायन, जहाजरानी तथा परिवहन संबंधी उद्योग तथा होटल उद्योग को भी शामिल

किया जाता है। भारतीय औद्योगिक विकास बैंक के कार्यों को बिंदु बार तरीके से इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है:-1).प्रत्यक्ष सहायता.

- 2). अप्रत्यक्ष सहायता.
- 3) विशेष सहायता.
- 4). विदेशी मुद्रा की आवश्यकता.